अहमदी
और
ग़ैर अहमदी में
क्या अंतर है

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

Difference between Ahmadi and Non Ahmadi

Soliciting worldly pleasure is the greatest obstruction in the way of God. Idol worship and social malpractices derail man from the correct path.

God-chosen Imam has the responsibility of guiding people to the original and pristine heavenly teachings.

In this article Hadhrat Imam Mahdi (as) discusses the difference between his followers and the general Muslims.

Only divine light can remove the worldly darkness.

अहमदी और ग़ैर अहमदी में क्या अन्तर है

भाषण
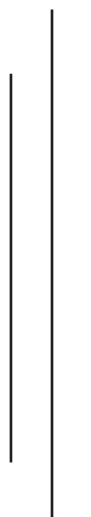
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: अहमदी और ग़ैर अहमदी में क्या अन्तर है
Name of book	: Ahmadi our Gair Ahmadi mein kya Antar hai
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

अहमदी और गैर अहमदी में क्या फ़र्क़ है

यह महामान्य हज़रत हुज्जतुल्ला मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक भाषण है जो आपने 27 दिसंबर 1905 ई० को ज़ुहर और असर की नमाज़ के बाद मस्जिद अक़्सा में दिया। 26 दिसंबर 1905 ई० की सुबह को मेहमान खाना जदीद के बड़े हॉल में दोस्तों का एक बड़ा जलसा इस उद्देश्य से आयोजित हुआ था कि मदरसा तालीमुल इस्लाम के सुधार के प्रश्न पर विचार करें। इसमें बहुत से भाइयों ने विभिन्न पहलुओं पर लेक्चर दिए। इन लेक्चर्स के बीच में एक भाई ने अपने लेक्चर के बीच में कहा कि जहां तक मैं जानता हूं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिलसिले और दूसरे मुसलमानों में केवल इतना अंतर है कि वह मसीह इब्ने मरियम का ज़िन्दा आकाश पर जाना स्वीकार करते हैं और हम विश्वास करते हैं कि वह मृत्यु पा चुके हैं इसके अतिरिक्त और कोई नई बात ऐसी नहीं जो हमारे और उनके मध्य सैद्धांतिक तौर पर विवाद योग्य हो। इससे चूंकि पूर्ण रूप से सिलसिले (अर्थात जमाअत अहमदिया-अनुवादक) के अवतरित होने के उद्देश्य का पता नहीं लग सकता था बल्कि एक बात संदिग्ध और कमज़ोर मालूम होती थी इसलिए आवश्यक था कि आप इसका सुधार करते। क्योंकि उस समय पर्याप्त समय न था इसलिए 27 दिसंबर को ज़ुहर और असर की नमाज़ के बाद आपने उचित समझा कि अपने अवतरित होने

के मूल उद्‌देश्य पर कुछ भाषण दें परंतु आपकी तबीयत भी खराब थी। केवल अल्लाह तआला की कृपा से आप ने अहमदी और गैर अहमदी में अंतर के बारे में भाषण दिया।

खाकसार

अब्दुल हई

मसीह मौऊद के अवतरण और सिलसिले की स्थापना का उद्‌देश्य

महामान्य हज़रत हुज्जतुल्ला मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक भाषण है जो आपने 27 दिसंबर 1905 ई० को ज़ुहर और असर की नमाज़ के बाद में मस्जिद अक़्सा में दिया। 26 दिसंबर 1905 की सुबह को मेहमान खाना जदीद के बड़े हॉल में दोस्तों का एक बड़ा जलसा इस उद्‌देश्य से आयोजित हुआ था कि मदरसा तालीमुल इस्लाम के सुधार के प्रश्न पर विचार करें। इसमें बहुत से भाइयों ने विभिन्न पहलुओं पर लेक्चर दिए ......इन लेक्चर्स के बीच में एक भाई ने अपने लेक्चर के बीच में कहा कि जहां तक मैं जानता हूं हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के सिलसिले और दूसरे मुसलमानों में केवल इतना अंतर है कि वह मसीह इब्ने मरियम का ज़िन्दा आकाश पर जाना स्वीकार करते हैं और हम विश्वास करते हैं कि वह मृत्यु पा चुके हैं इसके अतिरिक्त और कोई नई बात ऐसी नहीं जो हमारे और उनके मध्य सैद्धांतिक तौर

पर विवाद योग्य हो। इससे क्योंकि पूर्ण रूप से सिलसिले के अवतरित होने के उद्देश्य का पता नहीं लग सकता था बल्कि एक बात संदिग्ध और कमज़ोर मालूम होती थी इसलिए आवश्यक था कि आप इसका सुधार करते। क्योंकि उस समय पर्याप्त समय न था इसलिए 27 दिसंबर को ज़ुहर और असर की नमाज़ के बाद आपने उचित समझा कि अपने अवतरित होने के मूल उद्देश्य पर कुछ भाषण दें परंतु आपकी तबीयत भी खराब थी। केवल अल्लाह तआला की कृपा से आप ने अहमदी और गैर अहमदी में अंतर के बारे में भाषण दिया।

एडीटर अलहकम

आप ने फरमाया अफसोस है इस समय मेरी तबीयत ख़राब है और मैं कुछ अधिक बोल नहीं सकता परंतु एक ज़रूरी मामले के कारण कुछ बातें वर्णन करना आवश्यक समझता हूं। कल मैंने सुना था कि किसी साहिब ने यह वर्णन किया था कि जैसे हम में और हमारे विरोधी मुसलमानों के मध्य अंतर मसीह अलैहिस्सलाम की मौत और जीवन का है अन्यथा एक ही हैं और क्रियात्मक तौर पर हमारे विरोधियों का कदम भी सच पर है अर्थात नमाज़, रोज़ा और दूसरे कर्म मुसलमानों के हैं और वे सब कर्म अदा करते हैं। केवल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में एक गलती पड़ गई थी जिसके निवारण के लिए ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला पैदा किया। तो स्मरण रखना चाहिए कि यह बात सही नहीं। यह तो सच है कि मुसलमानों में यह गलती बहुत बुरी तरह पैदा हुई है लेकिन यदि कोई यह विचार करता है कि मेरा दुनिया में आना केवल इतनी ही गलती के निवारण के लिए है तथा अन्य कोई खराबी मुसलमानों में ऐसी न थी जिसका सुधार किया जाता बल्कि वे सीधे मार्ग पर हैं तो यह विचार गलत है। मेरे निकट मृत्यु या मसीह का जीवित रहना ऐसी बात नहीं कि इसके लिए अल्लाह तआला इतना बड़ा सिलसिला स्थापित करता और एक विशेष व्यक्ति को दुनिया में भेजा जाता और अल्लाह तआला उसे इस प्रकार से प्रकट करता जिससे उसकी बहुत बड़ी श्रेष्ठता पाई जाती है अर्थात यह कि दुनिया में अंधकार पैदा हो गया है और ज़मीन लानती हो गई है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत और ज़िन्दगी की गलती कुछ आज पैदा नहीं हो गई बल्कि यह गलती तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के थोड़े ही समय के बाद पैदा हो गई थी और विशेष रूप से अल्लाह के वली, नेक

लोग और अहलुल्लाह भी आते रहे और लोग इस गलती में गिरफ्तार रहे। यदि इस गलती का निवारण अभीष्ट होता तो अल्लाह तआला उस समय भी कर देता परंतु नहीं हुआ और यह गलती चली आई तथा हमारा युग आ गया। इस समय भी यदि इतनी ही बात होती तो अल्लाह तआला इसके लिए एक सिलसिला पैदा करता क्योंकि मसीह की मृत्यु ऐसी बात तो थी ही नहीं जो पहले किसी ने स्वीकार न की हो। पहले से भी अधिकतर विशेष लोग जिन पर अल्लाह तआला ने खोल दिया था यही मानते चले आए परंतु बात कुछ और है जो अल्लाह तआला ने इस सिलसिले को स्थापित किया। यह सच है कि मसीह के जीवित रहने की गलती को दूर करना भी इस सिलसिले का बहुत बड़ा उद्देश्य था परंतु मात्र इतनी ही बात के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा नहीं किया बल्कि बहुत सी बातें ऐसी पैदा हो चुकी थीं कि यदि उनके सुधार के लिए अल्लाह तआला एक सिलसिला स्थापित करके किसी को मामूर न करता तो दुनिया तबाह हो जाती और इस्लाम का नामोनिशान मिट जाता!! इसलिए इसी उद्देश्य को दूसरी शैली में हम यों कह सकते हैं कि हमारे अवतरित होने का उद्देश्य क्या है?

ईसा की मृत्यु और इस्लाम ज़िन्दगी यह दोनों उद्देश्य परस्पर बहुत बड़ा संबंध रखते हैं और मसीह की मृत्यु का विषय इस युग में इस्लाम के जीवन के लिए आवश्यक हो गया है इसलिए कि **मसीह के जीवित रहने** से जो फ़ित्ना पैदा हुआ है वह बहुत बढ़ गया है मसीह के जीवित रहने के लिए यह कहना कि क्या अल्लाह तआला इस बात पर सामर्थ्यवान नहीं कि उनको ज़िन्दा आकाश पर उठा ले

जाता अल्लाह तआला की कुदरत और उसकी★ से अपरिचित होने को प्रकट करता है। हम तो सबसे अधिक इस बात पर ईमान लाते और विश्वास करते हैं कि أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (अलबक़रह-107) अल्लाह तआला निस्संदेह हर बात पर सामर्थ्यवान है और हम ईमान रखते हैं कि निस्संदेह वह जो कुछ चाहे कर सकता है परंतु वह ऐसे मामलों से पवित्र और दोषों से बरी है जो उसकी पूर्ण विशेषताओं के विरुद्ध हो और वह उन बातों का दुश्मन है जो उसके धर्म के विपरीत हों। हज़रत ईसा का ज़िन्दा रहना प्रारंभ में तो केवल एक गलती का रंग रखता था परंतु आज यह गलती एक अजगर बन गई है जो इस्लाम को निगलना चाहती है। प्रारंभिक काल में इस गलती से किसी विद्रोह की आशंका न थी और वह गलती ही के रंग में थी परंतु जब से ईसाईयत ने जोर पकड़ा और उन्होंने मसीह के जीवन को उनकी ख़ुदाई का एक बड़ा जबरदस्त प्रमाण क़रार दिया तो यह खतरनाक बात हो गई। उन्होंने बार-बार और बड़े ज़ोर से इस बात को प्रस्तुत किया कि यदि मसीह ख़ुदा नहीं तो वह अर्श पर कैसे बैठा है? और यदि इंसान होकर कोई ऐसा कर सकता है कि ज़िन्दा आकाश पर चला जाए तो फिर क्या कारण है कि आदम से लेकर इस समय तक कोई भी आकाश पर नहीं गया? इस प्रकार के तर्क प्रस्तुत करके हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा बनाना चाहते हैं और उन्होंने बनाया तथा दुनिया के एक भाग को पथभ्रष्ट कर दिया और बहुत से मुसलमान जो तीस लाख से अधिक बताए जाते हैं इस गलती को सही आस्था स्वीकार करने के कारण इस फ़ित्ने का शिकार

★ यहाँ लिपिक की गलती से कोई शब्द छूट गया है

हो गए। अब यदि यह बात सही होती और वास्तव में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़िन्दा आकाश पर चले जाते जैसा कि ईसाई कहते हैं और मुसलमान अपनी गलती और अनभिज्ञता से उनका समर्थन करते हैं तो फिर इस्लाम के लिए **तो एक मातम का दिन होता** क्योंकि इस्लाम तो दुनिया में इसलिए आया है ताकि अल्लाह तआला के अस्तित्व पर दुनिया को एक ईमान और विश्वास पैदा हो और उसका एकेश्वरवाद अर्थात तौहीद फैले। वह ऐसा धर्म है कि उसमें कोई कमज़ोरी नहीं पाई जाती और न ही है। वह तो अल्लाह तआला ही को वहदहू लाशरीक क़रार देता है (अर्थात वह एक है उसका कोई भागीदार नहीं- अनुवादक) किसी दूसरे में यह विशेषता स्वीकार की जाए तो यह तो अल्लाह तआला की शान के ख़िलाफ़ है। और इस्लाम इसको वैध नहीं रखता परंतु ईसाइयों ने मसीह की इस विशेषता को प्रस्तुत करके दुनिया को गुमराह कर दिया है और मुसलमानों ने बिना सोचे समझे उनकी हां में हां मिला दी और हानि की परवाह न की जो इससे इस्लाम को पहुंची।

इस बात से कभी धोखा नहीं खाना चाहिए जो लोग कह देते हैं कि क्या अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ नहीं कि मसीह को ज़िन्दा आकाश पर उठा ले जाए? निस्संदेह वह समर्थ है परंतु ऐसी बातों का कभी वैध नहीं रखता जो शिर्क का स्रोत होकर किसी को स्रष्टा का भागीदार ठहराती हो और यह साफ प्रकट है कि एक व्यक्ति को कुछ कारणों की विशेषता देना स्पष्ट रूप से शिर्क का स्रोत है। अतः मसीह अलैहिस्सलाम में यह विशेषता स्वीकार करना कि वह समस्त इंसानों के विपरीत अब तक ज़िन्दा हैं और मानवीय विशेषताओं से

अलग हैं यह ऐसी विशेषता है जिसने ईसाइयों को अवसर दिया कि वह उनकी ख़ुदाई पर उसको बतौर तर्क प्रस्तुत करें। यदि कोई ईसाई मुसलमानों पर यह ऐतराज़ करे कि तुम ही बताओ कि ऐसी विशेषता इस समय किसी और व्यक्ति को भी मिली है? तो इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं है इसलिए कि वे विश्वास करते हैं कि सब नबी अलैहिस्सलाम मर गए हैं परंतु मसीह की मौत इन विरोधी मुसलमानों के कथनानुसार सिद्ध नहीं क्योंकि तवफ़्फ़ी के मायने तो आकाश पर ज़िन्दा उठाए जाने के करते हैं इसलिए फलम्मा तवफ़्फ़यतनी में भी यही अर्थ करने पड़ेंगे कि जब तू ने मुझे ज़िन्दा आकाश पर उठा लिया (सूरह माइदा 118) और कोई आयत सिद्ध नहीं करती कि उसकी मौत भी होगी। फिर बताओ कि उनका परिणाम क्या होगा? अल्लाह तआला इन लोगों को हिदायत दे और वह अपनी गलती को समझें। मैं सच कहता हूं कि जो लोग मुसलमान कहला कर इस आस्था की कमजोरी और खराबी के खुल जाने पर भी इसको नहीं छोड़ते वह इस्लाम के शत्रु और इसके लिए आस्तीन के सांप हैं।

स्मरण रखो अल्लाह तआला बार-बार पवित्र क़ुरआन में मसीह की मौत की चर्चा करता है और सिद्ध करता है कि वह दूसरे नबियों और इंसानों के समान मृत्यु पा चुके कोई बात उन में ऐसी न थी जो दूसरे नबियों और इंसानों में ना हो यह बिल्कुल सच है कि तवफ़्फ़ी के मायने मौत ही हैं किसी शब्दकोश से यह सिद्ध नहीं कि तवफ़्फ़ी के मायने कभी आकाश पर शरीर सहित उठाने के भी होते हैं। भाषा की खूबी शब्दकोशों के विस्तार पर है। दुनिया में कोई शब्दकोश ऐसा नहीं है जो केवल एक के लिए हो और दूसरे के लिए न हो। हां

ख़ुदा तआला के लिए यह विशेषता अवश्य है इसलिए कि वह वहदहू ला शरीक ख़ुदा है। शब्दकोश की कोई पुस्तक प्रस्तुत करो जिसमें तवफ़्फ़ी के यह मायने विशेष तौर पर हज़रत ईसा के लिए किए हुए हैं कि ज़िन्दा आकाश पर शरीर सहित उठाना है और समस्त संसार के लिए जब यह शब्द प्रयोग हो तो उसके मायने मौत के होंगे इसी प्रकार की विशिष्टता शब्दकोश की किसी पुस्तक में दिखाओ और यदि न दिखा सको और नहीं है तो फिर ख़ुदा तआला से डरो कि यह शिर्क का स्रोत है। इस गलती का यह परिणाम है कि मुसलमान ईसाइयों के ऋणी ठहरा करते हैं यदि ईसाई यह कहे कि जिस हाल में तुम उसी को ज़िन्दा स्वीकार करते हो कि वह आकाश पर है और फिर उसका आना भी मानते हो और यह भी कि वह हकम होकर आएगा अब बताओ कि उसके ख़ुदा होने में क्या संदेह रहा जबकि यह भी सिद्ध न हो कि उसको मौत हो होगी। यह कहना बड़े संकट की बात है कि **ईसाई प्रश्न करें और उसका उत्तर न हो।**

अत: इस गलती का बुरा प्रभाव यहां तक बढ़ गया। यह तो सच है कि वास्तव में मसीह की मौत की समस्या ऐसी बड़ी न थी कि इसके लिए एक महान मामूर की आवश्यकता होती। परंतु मैं देखता हूं कि मुसलमानों की हालत बहुत ही कमज़ोर हो गई है। उन्होंने पवित्र क़ुरआन पर विचार करना त्याग दिया और उनकी क्रियात्मक हालत खराब हो गई। यदि उनकी क्रियात्मक हालत सही होती और वह पवित्र क़ुरआन तथा उसके शब्दकोशों पर ध्यान देते तो ऐसे मायने कदापि न करते। उन्होंने इसीलिए अपनी ओर से यह मायने कर लिए तवफ़्फ़ी का शब्द कोई निराला और नया शब्द न था इसके मायने

समस्त अरब के शब्दकोशों में चाहे वह किसी ने लिखे हैं मौत के किए हैं फिर इन्होंने शरीर के साथ आकाश पर उठाने के मायने आप ही क्यों बना लिए। हमें अफसोस न होता यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी इस शब्द के यही मायने कर लेते क्योंकि यही शब्द आपके लिए भी तो पवित्र क़ुरआन में आया है जैसा कि फरमाया है-

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِى نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (सूरह यूनुस- 47)

अब बताओ कि यदि इस शब्द के मायने शरीर के साथ आकाश पर उठाना ही हैं तो क्या हमारा अधिकार नहीं कि आपके लिए भी यही मायने करें। क्या कारण है कि वह नबी जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हजारों दर्जे कमतर है उसके लिए जब यह शब्द बोला जाए तो उसके मनगढ़त मायने करके ज़िन्दा आकाश पर ले जाएं परंतु जब सैयदुल अव्वलीन व आखिरीन के लिए यह शब्द आए तो उसके मायने मौत के अतिरिक्त और कुछ न करें हालांकि आंहज़रत ज़िन्दा नबी हैं और आप का जीवन ऐसा सिद्ध है कि किसी अन्य नबी का सिद्ध नहीं और इसलिए हम ज़ोर और दावे से यह बात प्रस्तुत करते हैं कि **यदि कोई नबी ज़िन्दा है तो वह हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं।** अधिकांश बुज़ुर्गों ने हयातुन्नबी (नबी की जीवनी) पर पुस्तकें लिखी हैं और हमारे पास आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन के ऐसे ज़बरदस्त सबूत मौजूद हैं कि कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता। उन सब में से एक यह बात है कि ज़िन्दा नबी वही हो सकता है जिसकी बरकतें और वरदान हमेशा के लिए जारी हों और हम यह देखते हैं

कि अल्लाह तआला ने आप के युग से लेकर इस समय तक कभी भी मुसलमानों को व्यर्थ नहीं किया। हर सदी के सर पर उसने कोई आदमी भेज दिया जो युग का यथास्थिति सुधार करता रहा। यहां तक कि इस सदी पर उसने मुझे भेजा है ताकि मैं हयातुन्नबी का सबूत दूं। यह बात पवित्र क़ुरआन में भी मौजूद है कि अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म की रक्षा करता रहा है और करेगा जैसा कि फरमाता है-

إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(सूरह अलहिज्र - 10)

अर्थात निस्संदेह हमने ही इस ज़िक्र अर्थात क़ुरआन को उतारा है और हम ही इसकी सुरक्षा करेंगे। इन्ना लहू लहाफिज़ून का शब्द स्पष्ट तौर पर बताता है कि सदी के सर पर ऐसे आदमी आते रहेंगे जो खोए हुए सामान को लाएं और लोगों को स्मरण कराएं।

यह नियम की बात है कि जब पहली सदी गुज़र जाती है तो पहली नस्ल भी उठ जाती है और उस नस्ल में जो आलिम, हाफिज़ ए क़ुरआन, अल्लाह के वली और अब्दाल होते हैं वह मृत्यु पा जाते हैं और इस प्रकार से आवश्यकता होती है कि मिल्लत को (धर्म को) ज़िन्दा करने के लिए कोई व्यक्ति पैदा हो क्योंकि यदि दूसरी सदी में इस्लाम के ताज़ा रखने के लिए नया बंदोबस्त न करें तो यह धर्म मर जाए। इसलिए वह हर सदी के सर पर एक व्यक्ति को मामूर करता है जो इस्लाम को मरने से बचा लेता है और उसे नया जीवन प्रदान करता है तथा दुनिया को उन गलतियों, लापरवाहियों और आलस्य से बचा लेता है जो उन में पैदा होते हैं।

यह विशिष्टता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त है और यह आपके जीवन का ऐसा ज़बरदस्त तर्क है कि कोई इसका मुकाबला नहीं कर सकता। इस प्रकार से आप की **बरकतों एवं वरदानों** का सिलसिला अनंत और समाप्त होने वाला नहीं है और प्रत्येक युग में मानो उम्मत आपका ही लाभ पाती है और आप ही से शिक्षा प्राप्त करती है तथा अल्लाह तआला की प्रेमी बनती है जैसा कि फरमाया-

إِنْ كُنتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले इमरान - 32)

अत: ख़ुदा तआला का प्रेम स्पष्ट है कि उम्मत को किसी सदी में खाली नहीं छोड़ता और यही एक बात है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन पर रोशन तर्क है। इसके मुक़ाबले पर हज़रत ईसा का जीवित रहना सिद्ध नहीं। उनके जीवन ही में ऐसा फ़ित्ना खड़ा हुआ कि किसी अन्य नबी के जीवन में वह फ़ित्ना नहीं हुआ और यही कारण है कि अल्लाह तआला को हज़रत ईसा से पूछना पड़ा कि-

ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَأُمِّيَ إِلٰهَيْنِ (अलमायदा- 117)

अर्थात क्या तूने ही कहा था कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा बना लो। जो जमाअत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने तैयार की वह ऐसी कमज़ोर और अविश्वसनीय थी कि स्वयं यही ईसाई भी इसका इक़रार करते हैं।

इंजील से सिद्ध है कि वह 12 शिष्य (12 हवारी) जो उनकी विशेष क़ुव्वते क़ुदसी और प्रभाव का नमूना थे, उनमें से एक ने जिसका नाम यहूदा इस्क्रयूती था उसने 30 रुपये पर अपने आका और पथ प्रदर्शक को बेच दिया और दूसरे ने जो सबसे प्रथम नंबर

पर है और शागिर्द-ए-रशीद (परम शिष्य) कहलाता है तथा जिसके हाथ में स्वर्ग की कुंजियां थीं अर्थात पितरस, उसने सामने खड़े होकर तीन बार लानत की। जब स्वयं हज़रत मसीह की मौजूदगी में उनका प्रभाव और फ़ैज़ इतना था और अब 1900 वर्ष गुज़रने के बाद स्वयं अनुमान लगा लो कि क्या शेष रहा होगा। इसकी तुलना में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो जमाअत तैयार की थी वह ऐसी सच्ची और वफादार जमाअत थी कि उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए प्राण दे दिए, देश छोड़ दिए, प्रियजनों और रिश्तेदारों को छोड़ दिया। सारांश यह कि आपके लिए किसी चीज़ की परवाह नहीं की। यह कैसा जबरदस्त प्रभाव था। इस प्रभाव का भी विरोधियों ने इक़रार किया है और फिर आप के प्रभावों का सिलसिला बंद नहीं हुआ बल्कि अब तक वह चला जाता है। पवित्र क़ुरआन की शिक्षा में वही प्रभाव वही बरकतें अभी मौजूद हैं और फिर प्रभाव का एक और भी नमूना उल्लेखनीय है कि इंजील का कहीं पता ही नहीं लगता। स्वयं ईसाइयों को इस बात में कठिनाइयां हैं कि असल इंजील कौन सी है और वह किस भाषा में थी तथा कहां है? किंतु पवित्र क़ुरआन की निरंतर सुरक्षा होती चली आई है। एक शब्द और एक बिंदु तक उसका इधर-उधर नहीं हो सकता। इतनी सुरक्षा हुई है कि पवित्र क़ुरआन के हज़ारों-लाखों हाफिज़ हर देश और हर कौम में मौजूद हैं जिनमें परस्पर सहमति है। हमेशा याद करते और सुनाते हैं। अब बताओ कि क्या यह आप की ज़िन्दा बरकतें नहीं हैं? और क्या इनसे आपका ज़िन्दा रहना सिद्ध नहीं होता?

सारांश यह कि क्या पवित्र क़ुरआन की सुरक्षा की दृष्टि से

और क्या धर्म के नवीनीकरण के लिए हर सदी के सर पर मुजद्दिद के आने की हदीस से और क्या आपकी बरकतों तथा प्रभावों से जो अब तक जारी हैं आपका जीवित होना सिद्ध होता है। अब विचारणीय बात यह है कि हज़रत ईसा के जीवित रहने की आस्था ने दुनिया को क्या लाभ पहुंचाया है? क्या शिष्टाचार और व्यवहारिक तौर पर सुधार हुआ है या खराबी पैदा हुई है? इस बात पर जितना विचार करेंगे उतनी उसकी खराबियां प्रकट होती चली जाएंगी। मैं सच कहता हूं कि इस्लाम ने इस आस्था से बहुत हानि उठाई है यहां तक के 40 करोड़ के लगभग लोग ईसाई हो चुके जो सच्चे ख़ुदा को छोड़कर एक कमज़ोर इंसान को ख़ुदा बना रहे हैं और ईसाइयत ने दुनिया को जो लाभ पहुंचाया है वह प्रत्यक्ष बात है स्वयं ईसाइयों ने इस बात को स्वीकार किया है कि ईसाइयत के द्वारा दुनिया में बहुत सी अशिष्टताएँ फैली हैं क्योंकि जब इंसान को यह शिक्षा मिली कि उसके गुनाह किसी दूसरे के ज़िम्मे हो चुके तो वह गुनाह करने पर दिलेर हो जाता है और गुनाह मानव जाति के लिए एक खतरनाक ज़हर है जो ईसाइयत ने फैलाया है। इस स्थिति में इस आस्था की हानि और भी बढ़ जाती है। मैं यह नहीं कहता कि मसीह के जीवित रहने की आस्था के बारे में इसी युग के लोगों पर आरोप है। नहीं, कुछ पहलों ने गलती खाई है परंतु वे तो उस गलती में भी पुण्य ही पर रहे क्योंकि मुज्तहिद (धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वाला- अनुवादक) के बारे में लिखा है قد يختئ و يصيب कि कभी मुज्तहिद गलती भी करता है और कभी सही भी परंतु दोनों प्रकार से उसे पुण्य होता है। असल बात यह है कि ख़ुदा की इच्छा

ने यही चाहा था कि उनसे यह मामला गुप्त रहे तो वह लापरवाही में रहे और असहाबे कहफ़ की तरह यह वास्तविकता उन पर गुप्त रही जैसा कि मुझे भी इल्हाम हुआ था-

ام حسبت انّ اصحاب الکھف و الرقیم کانوا من اٰیاتنا عجبًا

तो इसी प्रकार मसीह के जीवित रहने का मामला भी एक अद्‌भुत रहस्य है इसके बावजूद कि पवित्र क़ुरआन खोल-खोल कर मसीह की मृत्यु सिद्ध करता है और हदीसों से भी यही सिद्ध है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर जो आयत सबूत के तौर पर पढ़ी गई वह भी इसी को सिद्ध करती है परंतु इतने स्पष्ट होने के बावजूद ख़ुदा तआला ने इसको छुपा लिया और आने वाले मौऊद के लिए उस को गुप्त रखा। जब वह आया तो **उसने इस रहस्य को प्रकट किया।**

यह अल्लाह तआला की हिकमत है कि वह जब चाहता है किसी भेद को गुप्त कर देता है और जब चाहता है उसे प्रकट कर देता है। इसी प्रकार उसने इस रहस्य को एक समय तक गुप्त रखा परंतु अब जबकि आने वाला आ गया और उसके हाथ में इस रहस्य की कुंजी थी उसने इसे खोल कर दिखा दिया। अब यदि कोई नहीं मानता और हठ करता है तो वह मानो अल्लाह तआला का मुकाबला करता है।

अत: मसीह की मृत्यु का विषय अब ऐसा विषय हो गया है कि इसमें किसी प्रकार की गोपनीयता नहीं रही। अब तो हर पहलू से साफ हो गया है। पवित्र क़ुरआन से मसीह की मृत्यु सिद्ध होती है, हदीस मृत्यु का समर्थन करती है, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की मेराज की घटना मृत्यु का सत्यापन करती है और आप जैसे चश्मदीद गवाही देते हैं क्योंकि आपने मेराज की रात में हज़रत ईसा को हज़रत यहिया के साथ देखा और फिर आयत-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल-94)

मसीह को ज़िन्दा आकाश पर जाने से रोकती है क्योंकि जब काफिरों ने आप से आकाश पर चढ़ जाने का चमत्कार मांगा तो अल्लाह तआला ने आपको यही उत्तर दिया-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल-94)

अर्थात मेरा रब इस वादा खिलाफ़ी (वादे के विरुद्ध करने) से पवित्र है जो एक बार तो वह इंसान के लिए यह निर्णय दे कि वह इसी ज़मीन में पैदा हुआ और यहां ही मरेगा।

فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (अलआराफ़-26)

मैं तो एक मनुष्य रसूल हूँ अर्थात वह बशरीयत (मनुष्य होना) मेरे साथ मौजूद है जो आकाश पर नहीं जा सकती। और वास्तव में काफिरों का उद्देश्य इस प्रश्न से यही था क्योंकि वह पहले सुन चुके थे के इंसान इस दुनिया में ज़िन्दा रहता है और मरता है इसलिए उन्होंने अवसर पाकर यह प्रश्न किया जिसका उत्तर उनको ऐसा दिया गया कि उनकी योजना मिट्टी में मिल गई। अत: यह तय किया हुआ मामला है कि मसीह मृत्यु पा चुके हैं। हाँ यह एक चमत्कारपूर्ण निशान है कि उन्हें लापरवाही में रखा और होशियारों को मस्त बना दिया।

यह भी स्मरण रखो कि जिन लोगों ने यह युग नहीं पाया वे असमर्थ हैं उन पर कोई हुज्जत पूरी नहीं हुई और उस समय अपने विवेचन से जो कुछ भी समझे उसके लिए अल्लाह तआला

से प्रतिफल और पुण्य पाएंगे परंतु अब समय नहीं रहा। इस समय अल्लाह तआला ने इस पर्दे को उठा दिया और उस गुप्त रहस्य को प्रकट कर दिया है तथा इस मामले के बुरे और भयावह प्रभावों को तुम देख रहे हो कि इस्लाम पतन की अवस्था में है और ईसाइयत का **यही हथियार मसीह का ज़िन्दा रहना** है जिसको लेकर वे इस्लाम पर आक्रमणकारी हो रहे हैं। और मुसलमानों की नस्ल ईसाइयत की शिकार हो रही है। मैं सच-सच कहता हूं कि ऐसे ही मामले में लोगों को सुना सुना कर अवज्ञाकारी कर रहे हैं और वह विशेषताएं जो मूर्खता से मुसलमान उनके लिए प्रस्तावित करते हैं स्कूलों और कॉलेजों में प्रस्तुत करके इस्लाम से पृथक कर रहे हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि मुसलमानों को सतर्क किया जाए★

अतः इस समय चाहा है कि मुसलमान सतर्क हो जाएँ कि **इस्लाम की उन्नति** के लिए यह पहलू नितांत आवश्यक है कि मसीह की मृत्यु के मामले पर ज़ोर दिया जाए और **वे इस बात के क़ायल ना हो कि मसीह ज़िन्दा आकाश पर गया है** परंतु मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि मेरे विरोधी अपने दुर्भाग्य से इस रहस्य को नहीं समझते और अकारण शोर मचाते हैं। काश यह मुर्ख समझते कि यदि हम सब मिलकर मृत्यु पर ज़ोर देंगे तो फिर यह धर्म (ईसाई) नहीं रह सकता। मैं निस्संदेह कहता हूं कि इस्लाम का जीवन उस की मृत्यु में है। स्वयं ईसाइयों से पूछ कर देख लो कि जब यह सिद्ध हो जाए मसीह ज़िन्दा नहीं अपितु मर गया है तो उनके धर्म का क्या शेष रह जाता है? वह स्वयं इस बात के क़ायल हैं कि यह एक समस्या

★अल्हकम जिल्द 10, नंबर 6, दिनांक 17 फ़रवरी 1906 ई० पृषल्ठ 2,3

है जो उनके धर्म का उन्मूलन करती है परंतु मुसलमान हैं कि मसीह के जीवित रहने के क़ायल होकर उनको दृढ़ता पहुंचा रहे हैं और इस्लाम को हानि पहुंचाते हैं इनका वही उदाहरण है- यके बर सर शाख व बुन मे बरीद।

ईसाइयों का जो हथियार इस्लाम के विरुद्ध था उसी को इन मुसलमानों ने अपने हाथ में ले लिया★और अपनी अज्ञानता और मूर्खता से चला दिया जिससे इस्लाम को कितनी हानि पहुंची परंतु प्रसन्नता की बात है अल्लाह तआला ने उनको अवगत करा दिया और ऐसा हथियार प्रदान किया जो शरीर को तोड़ने के लिए अद्वितीय है और उसके समर्थन और इस्तेमाल के लिए उसने यह सिलसिला स्थापित किया। अल्लाह तआला की कृपा और समर्थन से इस **मसीह की मृत्यु** के हथियार ने ईसाई धर्म को जितना कमज़ोर और सुस्त कर दिया है वह अब छुपी हुई बात नहीं रही। ईसाई धर्म और उसके सहायक समझ सकते हैं कि यदि कोई फ़िर्क़ा और सिलसिला उनके धर्म को मार सकता है तो वह यही सिलसिला है। यही कारण है कि वह प्रत्येक अहले मज़हब से मुक़ाबले के लिए तत्पर हो जाते हैं परंतु इस सिलसिले के मुक़ाबले पर नहीं आते। बिशप साहिब को जब मुक़ाबले का निमंत्रण दिया गया तो यद्यपि उसको कुछ अंग्रेज़ी अखबारों ने भी जोश दिलाया परंतु फिर भी वह मैदान में न निकला। उसका कारण यही है कि हमारे पास ईसाइयत के उन्मूलन के लिए ऐसे हथियार हैं जो दूसरों को नहीं दिए गए और उनमें से पहला

★ **हाशिया-** बद्र में है आश्चर्य है कि ईसाई तो मुसलमानों की गर्दन काटने के लिए यह हथियार प्रयोग करते हैं और मुसलमान भी अपनी गर्दन कटवाने के लिए उनकी सहायता में खड़े हो जाते हैं (बद्र जिल्द 2 नम्बर 26, 4 जनवरी 1986 पृष्ठ 3)

हथियार यही मसीह की मृत्यु का हथियार है। मृत्यु असली उद्देश्य नहीं यह तो इसलिए कि यह ईसाइयों का हथियार था जिससे इस्लाम को हानि थी अल्लाह तआला ने चाहा कि इस गलती का निवारण करे। अत: बड़े ज़ोर के साथ उसका सुधार किया गया।

इसके अतिरिक्त उन ग़लतियों और बिदअतों को दूर करना भी असल उद्देश्य है जो इस्लाम में पैदा हो गईं हैं। यह सोच की कमी का परिणाम है यदि यह कहा जाए कि इस सिलसिले में और दूसरे मुसलमानों में कोई अंतर नहीं है। यदि मौजूदा मुसलमानों की आस्थाओं में कोई अंतर नहीं आया और दोनों एक ही हैं तो फिर क्या ख़ुदा तआला ने इस सिलसिले को बेकार स्थापित किया? ऐसा सोचना इस सिलसिले का घोर अपमान और अल्लाह तआला के सामने एक साहस और धृष्टता है। अल्लाह तआला ने बार-बार प्रकट किया है कि दुनिया में बहुत अंधकार छा गया है व्यवहारिक हालत की दृष्टि से भी और आस्थागत हालत के कारण से भी। वह एकेश्वरवाद जिसके लिए असंख्य नबी और रसूल दुनिया में आए और उन्होंने असीम परिश्रम और प्रयास किया आज उस पर एक काला पर्दा पड़ा हुआ है तथा लोग कई प्रकार के शिर्क में ग्रस्त हो गए हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि दुनिया से प्रेम न करो परंतु अब दुनिया का प्रेम प्रत्येक हृदय पर विजयी हो चुका है और जिसको देखो उसी प्रेम में डूबा हुआ है। धर्म के लिए एक तिनका भी हटाने के लिए कहा जाए तो वह सोच में पड़ जाता है कि हज़ारों उज़्र और बहाने करने लगता है। हर प्रकार के दुष्कर्म और व्यभिचार को वैध समझ लिया गया है और हर प्रकार के निषेध आदेशों पर खुल्लम-

खुल्ला ज़ोर दिया जाता है। धर्म बिल्कुल असहाय और अनाथ हो रहा है ऐसी स्थिति में यदि इस्लाम का समर्थन और सहायता न की जाती तो कौन सा समय इस्लाम पर आने वाला है जो उस समय सहायता की जाए। इस्लाम तो केवल नाम का शेष रह गया है। अब भी यदि रक्षा न की जाती तो फिर इसके मिटने में क्या संदेह हो सकता था। मैं सच कहता हूं कि यह केवल विचार की कमी का परिणाम है जो कहा जाता है कि दूसरे मुसलमानों में क्या अंतर है। यदि केवल एक ही बात होती तो इतना परिश्रम करने की क्या आवश्यकता थी, एक सिलसिला स्थापित करने की क्या ज़रूरत थी? मैं जानता हूं कि अल्लाह तआला बार-बार प्रकट कर चुका है कि ऐसा अंधकार छा गया है कि कुछ नज़र नहीं आता। वह तौहीद (एकेश्वरवाद) जिसका हमें गर्व था और इस्लाम जिस पर अभिमान करता था वह केवल ज़बानों पर रह गई है अन्यथा व्यवहारिक एवं आस्था के तौर पर बहुत ही कम होंगे जो तौहीद के क़ायल हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था दुनिया से प्रेम न करना परंतु अब प्रत्येक दिल इसी में डूबा हुआ है और धर्म एक असहाय तथा अनाथ के समान रह गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट तौर पर फरमाया था- حُبُّ الدُّنیا رَأسُ کُلّ خطیئۃٍ यह कैसा पवित्र और सच्चा कलिमा है परंतु आज देख लो प्रत्येक इस गलती में लिप्त है। हमारे विरोधी आर्य और ईसाई अपने धर्मों की वास्तविकता को खूब समझ चुके हैं परंतु अब उसे निभाना चाहते हैं। ईसाई अच्छी तरह जानते हैं कि उनके धर्म के सिद्धांत तथा शाखें अच्छे नहीं। एक इंसान को ख़ुदा बनाना ठीक नहीं। इस युग में दर्शनशास्त्र, भौतिकी और साइंस

के ज्ञान उन्नति कर गए हैं तथा लोग भली-भांति समझ गए हैं कि मसीह एक दुर्बल और कमज़ोर इंसान होने के अतिरिक्त कोई सत्ता संबंधी शक्ति अपने अंदर न रखता था। और यह असंभव है कि इन विद्याओं को पढ़कर स्वयं अपने अस्तित्व का अनुभव रखकर तथा मसीह की कमज़ोरियों और शक्ति हीनताओं को देखकर यह विश्वास रखें कि वह ख़ुदा था, कदापि नहीं।

शिर्क औरत से आरंभ हुआ है और औरत से इसकी बुनियाद पड़ी है अर्थात हव्वा से जिसने ख़ुदा तआला के आदेश को छोड़कर शैतान का आदेश माना और इस महाशिर्क अर्थात ईसाई धर्म की सहायक भी औरतें ही हैं। वास्तव में ईसाई धर्म ऐसा धर्म है कि इंसान ही प्रकृति दूर से उसको धक्के देती है और वह कभी उसे स्वीकार ही नहीं कर सकती। यदि मध्य में दुनियादारी न होती तो ईसाइयों का बहुसंख्यक गिरोह आज मुसलमान हो जाता। ईसाइयों में कुछ लोग गुप्त मुसलमान रहे हैं और उन्होंने अपने इस्लाम को छुपाया है परंतु मरने के समय अपनी वसीयत की और इस्लाम प्रकट किया है। ऐसे लोगों में बड़े-बड़े पदाधिकारी थे। उन्होंने संसार प्रेम के कारण जीवन में इस्लाम को छुपाया परंतु अंत में उन्हें प्रकट करना पड़ा। मैं देखता हूं कि इन दिलों में इस्लाम ने मार्ग बना लिया है और अब वह उन्नति कर रहा है दुनिया के प्रेम ने लोगों को रोक रखा है।

अतः मुसलमानों में आंतरिक फूट का कारण भी यही संसार प्रेम ही हुआ है। क्योंकि यदि केवल अल्लाह तआला की रज़ा प्राथमिक होती तो आसानी से समझ में आ सकता था कि अमुक फिरके के सिद्धांत अधिक साफ हैं और वे उन्हें स्वीकार करके एक हो जाते।

अब जबकि संसार प्रेम के कारण यह ख़राबी पैदा हो रही है तो ऐसे लोगों को कैसे मुसलमान कहा जा सकता है जबकि उनका कदम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कदम पर नहीं। अल्लाह तआला ने तो फरमाया था-

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ

(आले इमरान 32)

अर्थात कहो यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा आज्ञापालन करो अल्लाह तआला तुमको दोस्त रखेगा। अब उस ख़ुदा से प्रेम की बजाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन की बजाय संसार प्रेम को प्राथमिक किया गया है। क्या यही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन है? क्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनियादार थे? क्या वह ब्याज लिया करते थे? या कर्तव्यों और ख़ुदा के आदेशों के पालन में लापरवाही किया करते थे? क्या आप में माज़अल्लाह कपट था? चापलूसी थी? दुनिया को दीन पर प्राथमिकता देते थे? विचार करो।

इत्तिबाअ (आज्ञापालन) तो यह है कि आपके पदचिन्हों पर चलो और फिर देखो कि अल्लाह तआला कैसी-कैसी कृपा करता है। सहाबा ने वह चलन ग्रहण किया था फिर देख लो अल्लाह तआला ने उन्हें कहां से कहां पहुंचाया। उन्होंने दुनिया पर लात मार दी थी और दुनिया के प्रेम से बिल्कुल पृथक हो गए थे, अपनी इच्छाओं पर एक मृत्यु डाल दी थी। अब तुम अपनी हालत को उन से तुलना करके देख लो क्या उन्हीं के कदमों पर हो? अफसोस इस समय लोग नहीं समझते कि ख़ुदा तआला उनसे क्या चाहता है?

رَأسُ كُلِّ خطيئةٍ (अर्थात हर गुनाह की जड़) ने बहुत से बच्चे दे दिए हैं। कोई आदमी अदालत में जाता है तो आने- दो आने लेकर झूठी गवाही दे देने में थोड़ी सी भी शर्म और लज्जा नहीं करता। क्या वकील क़सम खाकर कह सकते हैं कि सारे के सारे गवाह सच्चे प्रस्तुत करते हैं? आज दुनिया की हालत बहुत नाज़ुक हो गई है जिस पहलू और रंग से देखो झूठे गवाह बनाए जाते हैं, झूठे मुकद्दमे करना तो बात ही कुछ नहीं। झूठे प्रमाण बना लिए जाते हैं। कोई बात वर्णन करेंगे तो सच का पहलू बचाकर बोलेंगे। अब कोई इन लोगों से जो इस सिलसिले (अर्थात जमाअत अहमदिया- अनुवादक) की आवश्यकता नहीं समझते, पूछे कि क्या यही वह धर्म था जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए थे? अल्लाह तआला ने तो झूठ को विष्ठा कहा था कि इससे बचो-

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

(अलहज- 31)

बुतपरस्ती (मूर्ती पूजा) के साथ इस झूठ को मिलाया है जैसा मूर्ख इंसान अल्लाह तआला को छोड़कर पत्थर की ओर सर झुकाता है वैसे ही सच और ईमानदारी को छोड़कर अपने मतलब के लिए झूठ को बुत अर्थात मूर्ति बनाता है यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उसको मूर्ति पूजा के साथ मिलाया और उस से तुलना की जैसे एक मूर्तिपूजक मूर्ति से मुक्ति चाहता है झूठ बोलने वाला भी अपनी ओर से मूर्ति बनाता है और समझता है कि उस मूर्ति के कारण मुक्ति हो जाएगी। कैसी खराबी आकर पड़ी है यदि कहा जाए कि क्यों मूर्तिपूजक होते हो, इस गंदगी को छोड़ दो तो कहते हैं कि कैसे

छोड़ दें इसके बिना गुज़ारा नहीं हो सकता। इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य होगा कि झूठ पर अपने जीवन का आधार समझते हैं परंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि अंत में सच ही सफल होता है भलाई और विजय उसी की है।

मुझे याद है कि मैंने एक बार अमृतसर एक निबंध भेजा उसके साथ ही एक पत्र भी था। रलिया राम के वकील हिन्द अख़बार के संबंध में था। मेरे उस पत्र को डाक खाने के कानून के विरुद्ध ठहरा पर मुकद्दमा बनाया गया। वकीलों ने भी कहा कि इसमें इसके अतिरिक्त रिहाई नहीं कि इस पत्र से इंकार कर दिया जाए। मानो झूठ के अतिरिक्त बचाव नहीं। परंतु मैंने इसको कदापि पसंद न किया अपितु यह कहा कि यदि सच बोलने से दण्ड होता है तो होने दो झूठ नहीं बोलूंगा। अंततः वह मुकदमा अदालत में प्रस्तुत हुआ डाकखानों का अफसर मुद्दई की हैसियत से उपस्थित हुआ। मुझसे जिस समय उसके बारे में पूछा गया तो मैंने साफ तौर पर कहा कि यह मेरा पत्र है किंतु मैंने इसको निबंध का भाग समझकर इसमें रखा है। मजिस्ट्रेट की समझ में यह बात आ गई और अल्लाह तआला ने उसको समझ दी। डाकखानों के अफसर ने बहुत ज़ोर दिया परंतु उसने एक न सुनी और मुझे बरी कर दिया।★

★ **हाशिया-** बद्र में यह घटना अधिक विवरण के साथ यों दर्ज है- संभवतः 27 या 28 वर्ष का समय गुज़रा होगा या शायद इससे कुछ अधिक हो कि इस खाकसार ने इस्लाम के समर्थन में आर्यों के मुक़ाबले पर एक ईसाई के प्रेस में जिसका नाम रलिया राम था और वकील भी था तथा अमृतसर में रहता था और उसका एक अखबार भी निकलता था एक निबंध छापने के उद्देश्य

मैं कैसे कहूं कि झूठ के बिना गुज़ारा नहीं। ऐसी बातें निरी बेहूदगियां हैं सच तो यह है कि सच के बिना गुज़ारा नहीं। मैं अब तक भी जब अपनी इस घटना को याद करता हूं तो एक मज़ा आता है कि ख़ुदा तआला के पहलू को अपनाया उसने हमारा ध्यान रखा और ऐसा ध्यान रखा जो एक निशान के तौर पर हो गया।

مَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَھُوَ حَسۡبُہٗ

(अत्तलाक़ आयत - 4)

निस्संदेह याद रखो कि झूठ जैसी कोई मनहूस (अशुभ) चीज़ नहीं। सामान्यतया दुनियादार कहते हैं कि सच बोलने वाले गिरफ्तार

★ **शेष हाशिया -** से एक पैकेट के रूप में जिसके दोनों सिरे खुले थे, भेजा। और उस पैकेट में एक पत्र भी रख दिया क्योंकि पत्र में ऐसे शब्द थे जिन में इस्लाम का समर्थन और अन्य धर्मों के खंडन की ओर संकेत था और निबंध के छाप देने के लिए ताकीद भी थी। इसलिए वह ईसाई, विरोधी धर्म के कारण क्रोधित हुआ और संयोग से उसको शत्रुतापूर्ण आक्रमण के लिए यह अवसर मिला कि किसी अलग पत्र को पैकेट में रखना कानून के अनुसार एक अपराध था जिसकी इस विनीत को कुछ भी जानकारी न थी और ऐसे अपराध के दंड में डाक के कानूनों की दृष्टि से 500 रुपये जुर्माना या छह माह तक क़ैद है। अत: उसने जासूस बनकर डाक के अफसरों से इस विनीत पर मुकद्दमा दायर करा दिया और इससे पूर्व कि मुझे इस मुकद्दमे की कुछ सूचना हो स्वप्न में अल्लाह तआला ने मुझ पर प्रकट किया के रलिया राम वकील ने एक सांप मेरे काटने के लिए भेजा है और मैंने उसे मछली की तरह तलकर वापस भेज दिया है। मैं जानता हूं कि यह इस बात की ओर संकेत था कि अंत में वह मुकद्दमा जिस ढंग से अदालत में निर्णय पाया वह एक ऐसा उदाहरण है जो वकीलों के काम में आ सकता है।

हो जाते हैं परंतु मैं इस पर कैसे विश्वास करूं? मुझ पर 7 मुकद्दमे हुए हैं और ख़ुदा तआला की कृपा से किसी एक में एक शब्द भी मुझे झूठ लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे पराजय दी हो। अल्लाह तआला तो स्वयं सच्चाई का सहायक और मदद करने वाला है। यह हो सकता है कि वह सच्चे को दंड दे? यदि ऐसा हो तो दुनिया में फिर कोई व्यक्ति सच बोलने का साहस न करे और ख़ुदा तआला पर से ही विश्वास उठ जाए। सत्यनिष्ठ तो ज़िन्दा ही मर जाएं।

असल बात यह है कि सच बोलने से जो दंड पाते हैं वह सच

शेष हाशिया - अतः मैं इस अपराध में सदर ज़िला गुरदासपुर में बुलाया गया और जिन-जिन वकीलों से मुकद्दमे के लिए मशवरा लिया गया उन्होंने यही मशवरा दिया कि झूठ बोलने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं और यह परामर्श दिया कि इस प्रकार से इक़रार दे दो कि हमने पैकेट में पत्र नहीं डाला, रलिया राम ने स्वयं डाल दिया होगा तथा तसल्ली देने के लिए कहा कि ऐसा बयान देने से गवाही पर फैसला हो जाएगा और दो-चार झूठे गवाह देकर बरीयत हो जाएगी अन्यथा मुकद्दमे का रूप बहुत कठिन है और कोई रिहाई का तरीका नहीं। परंतु मैंने उन सब को उत्तर दिया कि मैं किसी हालत में सच को छोड़ना नहीं चाहता जो होगा सो होगा। तब उसी दिन या दूसरे दिन मुझे एक अंग्रेज़ की अदालत में प्रस्तुत किया गया और मेरे मुक़ाबले पर डाकखानों का अफसर सरकारी मुद्दई की हैसियत से उपस्थित हुआ। उस समय हाकिम ने अपने हाथ से मेरा इक़रार लिखा और सर्वप्रथम मुझसे यही प्रश्न किया कि क्या यह पत्र तुमने अपने पैकेट में रख दिया था और यह पत्र तथा यह पैकेट तुम्हारा है? मैंने अविलंब उत्तर दिया यह मेरा ही पत्र और मेरा ही पैकेट है और मैंने इस पत्र को इस पैकेट के अंदर रख कर भेजा था परंतु मैंने सरकार को टैक्स की हानि पहुंचाने

के कारण नहीं होता। वह दंड उनके कुछ अन्य गुप्त दुष्कर्मों का होता है और किसी अन्य झूठ का दंड होता है। ख़ुदा तआला के पास तो उनकी बुराइयों और शरारतों का एक सिलसिला होता है। उनकी बहुत सी गलतियां होती हैं और किसी न किसी में वे दंड पा लेते हैं।

मेरे एक उस्ताद गुल अली शाह बटाला के रहने वाले थे। वह शेर सिंह के पुत्र प्रताप सिंह को भी पढ़ाया करते थे। उन्होंने वर्णन किया एक बार शेर सिंह ने अपने बावर्ची को केवल नमक मिर्च के अधिक होने पर बहुत मारा। अत: क्योंकि वह बड़े सादा मिजाज़ थे

शेष हाशिया - के लिए बुरी नियत से यह काम नहीं किया अपितु मैंने इस पत्र को इस निबंध से कुछ अलग नहीं समझा और न इसमें कोई निजी बात थी। इस बात को सुनते ही ख़ुदा तआला ने उस अंग्रेज़ के दिल को मेरी ओर फेर दिया और मेरे मुक़ाबले पर डाकखानों के अफसर ने बहुत शोर मचाया और लंबे-लंबे भाषण अंग्रेज़ी में दिए जिनको मैं नहीं समझता था परंतु मैं इतना समझता था कि प्रत्येक भाषण के बाद वह हाकिम अंग्रेज़ी भाषा में नो-नो करके उसकी सब बातों को अस्वीकार कर देता था। अंतत: जब वह मुद्दई अफसर अपने समस्त कारण प्रस्तुत कर चुका और अपने समस्त ज्वर निकाल चुका तो हाकिम ने फैसला लिखने की ओर ध्यान दिया और शायद एक पंक्ति या डेढ़ पंक्ति लिख कर मुझको कहा कि अच्छा आपके लिए रुखसत। यह सुनकर मैं अदालत के कमरे से बाहर हुआ और अपने वास्तविक उपकारी (ख़ुदा) का धन्यवाद अदा किया जिसने एक अंग्रेज़ अफसर के मुक़ाबले पर मुझको ही विजय प्रदान की। और मैं खूब जानता था कि उस समय सच की बरकत से ख़ुदा तआला ने मुझे उस बला से मुक्ति दी। मैंने इससे पूर्व यह स्वप्न भी देखा था कि एक व्यक्ति ने मेरी टोपी उतारने के लिए हाथ मारा मैंने कहा क्या करने लगा है? तब उसने टोपी को मेरे सर पर ही रहने दिया कि खैर है, खैर है।

(अख़बार बद्र जिल्द 2, नंबर 5, पृष्ठ 3, दिनांक 2 फरवरी 1906 ई०)

उन्होंने कहा कि आपने बड़ा ज़ुल्म किया। इस पर शेर सिंह ने कहा मौलवी जी आपको ख़बर नहीं इसने मेरा सौ बकरा खाया है। इसी प्रकार से इंसान के दुष्कर्मों का एक भंडार होता है और वह किसी एक अवसर पर पकड़ा जा कर दंड पाता है।★ जो व्यक्ति सच्चाई ग्रहण करेगा कभी नहीं हो सकता कि अपमानित हो। इसलिए कि वह ख़ुदा तआला की सुरक्षा में होता है और ख़ुदा तआला की सुरक्षा जैसा और कोई सुरक्षित किला और परिधि नहीं परंतु अधूरी बात लाभ नहीं पहुंचा सकती। क्या कोई कह सकता है कि जब प्यास लगी हुई हो तो केवल एक बूंद पी लेना पर्याप्त होगा या तीव्र भूख के समय एक दाना या कोर से तृप्त हो जाएगा? बिल्कुल नहीं। अपितु जब तक पूरा तृप्त होकर पानी न पिए या खाना न खाए तसल्ली न होगी। इसी प्रकार जब तक कर्मों में कमाल न हो वह फल और परिणाम पैदा नहीं होते जो होने चाहिए। अधूरे कर्म अल्लाह तआला को प्रसन्न नहीं कर सकते और न वह बरकत वाले हो सकते हैं। अल्लाह तआला का यही वादा है कि मेरी मर्ज़ी के अनुसार कर्म करो फिर मैं बरकत दूंगा।

अत: यह बातें दुनियादार स्वयं ही बना लेते हैं कि झूठ और छल के बिना गुज़ारा नहीं। कोई कहता है कि अमुक आदमी ने मुकद्दमे में सच बोला था इसलिए 4 वर्ष को धर लिया गया। मैं फिर कहूंगा कि यह सब ख़याली बातें हैं जो मारिफत (अध्यात्म ज्ञान) के अभाव से पैदा होती हैं।

★ **हाशिया -** बद्र में है इंसान गुनाह किसी और अवसर पर करता है और पकड़ा किसी और अवसर पर जाता है।

(अख़बार बद्र जिल्द 2, नंबर 6, पृष्ठ 3, दिनांक 9 फरवरी 1906 ई०)

कस्बे कमाल कुन कि अज़ीज़े जहां शवा

यह अधूरेपन के परिणाम हैं कमाल (पराकाष्ठा) ऐसे फल पैदा नहीं करता। एक व्यक्ति यदि अपनी मोटी सी खद्दर की चादर में कोई तोपा भर ले तो उससे वह दर्ज़ी नहीं बन जाएगा और यह अनिवार्य नहीं होगा कि वह उत्तम श्रेणी का रेशमी कपड़े भी सिल लेगा। यदि उसे ऐसे कपड़े दिए जाएं तो परिणाम यही होगा कि वह उन्हें बर्बाद कर देगा तो ऐसी नेकी जिसमें गन्दगी मिली हुई हो किसी काम की नहीं। ख़ुदा तआला के सामने उसका कुछ महत्व नहीं परंतु यह लोग इस पर गर्व करते हैं और उसके द्वारा मुक्ति चाहते हैं। यदि निष्कपटता हो तो अल्लाह तआला तो एक कण भी किसी नेकी को व्यर्थ नहीं करता उसने तो स्वयं फरमाया है-★ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (ज़िलज़ाल-8) इसलिए यदि लेश मात्र भी नेकी हो तो अल्लाह तआला से उसका प्रतिफल पाएगा फिर क्या कारण है कि इतनी नेकी करके फल नहीं मिलता? इसका कारण यही है कि उसमें श्रद्धा नहीं आई है। कर्मों के लिए श्रद्धा शर्त है जैसा कि फरमाया- مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ (अलबय्यिना- 6) श्रद्धा उन लोगों में होती है जो अबदाल हैं।

ये लोग अब्दाल हो जाते हैं और वह इस दुनिया के नहीं रहते उनके हर काम में एक निश्छलता और योग्यता होती है किंतु दुनियादारों का तो यह हाल है कि वे दान भी करते हैं तो उसके लिए प्रशंसा और तारीफ चाहते हैं। यदि कोई किसी नेक काम में चंदा देता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि अखबारों में उसकी प्रशंसा हो,

★अर्थात जो लेश मात्र भी नेकी करेगा वह उसे देख लेगा- अनुवादक

लोग तारीफ करें। इस नेकी का ख़ुदा तआला से क्या संबंध? बहुत लोग शादियां करते हैं उस समय सारे गांव में रोटी देते हैं परंतु ख़ुदा के लिए नहीं केवल प्रदर्शन और प्रशंसा के लिए। यदि दिखावा न होता और मात्र ख़ुदा की मखलूक (सृष्टि) पर दयादृष्टि के उद्देश्य से यह कार्य होता और शुद्ध रूप से ख़ुदा के लिए होता तो वली हो जाते परंतु चूँकि इन कामों का ख़ुदा तआला से कोई संबंध नहीं होता और मतलब नहीं होता इसलिए कोई नेक और बरकत वाला प्रभाव उनमें पैदा नहीं होता।

यह भली-भांति स्मरण रखो कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए हो जाए ख़ुदा तआला उसका हो जाता है और ख़ुदा तआला किसी के धोखे में नहीं आता। यदि कोई यह चाहे कि दिखावे और छल के द्वारा ख़ुदा को ठग लूंगा तो यह मूर्खता और नादानी है। वह स्वयं ही धोखा खा रहा है दुनिया के श्रंगार दुनिया का प्रेम समस्त अपराधों की जड़ है इसमें अंधा होकर इंसान इंसानियत से निकल जाता है और नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूं और मुझे क्या करना चाहिए था। जिस हालत में बुद्धिमान व्यक्ति किसी के धोखे में नहीं आ सकता तो अल्लाह तआला क्योंकर किसी के धोखे में आ सकता है परंतु ऐसे बुरे कार्यों की जड़ दुनिया का प्रेम है और सबसे बड़ा गुनाह जिसने इस समय मुसलमानों को दुर्दशाग्रस्त कर रखा है और जिसमें वे लिप्त हैं वह यही दुनिया का प्रेम है। सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते हर समय लोग इसी ग़म और चिंता में फंसे हुए हैं और उस समय का ध्यान और विचार भी नहीं करते कि जब क़ब्र में रखे जाएंगे। ऐसे लोग यदि अल्लाह तआला से डरते और धर्म के लिए तनिक भी गम

और चिंता रखते तो बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर लेते। सादी कहता है-

गर वज़ीर अज़ ख़ुदा तरसी दे।

कर्मचारी लोग थोड़ी सी नौकरी के लिए अपने काम में कैसे चुस्त और चालाक होते हैं परंतु जब नमाज़ का समय आता है तो थोड़ा ठंडा पानी देखकर ही रह जाते हैं। ऐसी बातें क्यों पैदा होती हैं? इसलिए कि अल्लाह तआला की श्रेष्ठता दिल में नहीं होती। यदि ख़ुदा तआला की कुछ भी श्रेष्ठता हो तथा मरने का ख्याल और विश्वास हो तो समस्त सुस्ती और लापरवाही जाती रहे। इसलिए ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता को दिल में रखना चाहिए और उससे हमेशा डरना चाहिए उसकी गिरफ्त खतरनाक होती है। वह किसी को दोषी देखकर भी निगाह बचा जाता है और क्षमा करता है परंतु जब किसी को पकड़ता है तो फिर बहुत सख्त पकड़ता है यहां तक कि لَا يَخَافُ عُقْبٰهَا (अश्शम्स- 16) फिर वह इस बात की भी परवाह नहीं करता कि उसके पिछलों का क्या हाल होगा। इसके विपरीत जो लोग अल्लाह तआला से डरते और उसकी श्रेष्ठता को दिल में स्थान देते हैं ख़ुदा तआला उनको सम्मान देता और स्वयं उनके लिए एक ढाल हो जाता है। हदीस में आता है- "मन काना लिल्लाहे कानल्लाहु लहू" अर्थात जो मनुष्य अल्लाह तआला के लिए हो जाए अल्लाह तआला उसका हो जाता है परंतु अफसोस यह है कि जो लोग इस ओर ध्यान देते हैं और ख़ुदा तआला की ओर आना चाहते हैं उनमें से अधिकतर यही चाहते हैं कि **हथेली पर सरसों जमा दी जाए।** वे नहीं जानते कि धर्म के कामों में कितने धैर्य और हौसले की आवश्यकता है और आश्चर्य तो यह है कि वह दुनिया जिसके लिए वह रात-दिन मरते

और टक्करें मारते हैं उसके कामों के लिए तो वर्षों प्रतीक्षा करते हैं। किसान बीज बोकर कितने समय तक प्रतीक्षा में रहता है परंतु धर्म के कामों में आते हैं तो कहते हैं कि फूंक मारकर **वली बना दो** और पहले ही दिन चाहते हैं कि अर्श पर पहुंच जाएं हालांकि उस मार्ग में न कोई मेहनत और कष्ट उठाया और न किसी इब्तेला (आज़माइश) के नीचे आए।

खूब स्मरण रखो कि अल्लाह तआला का यह कानून और विधान नहीं है यहां हर उन्नति धीरे-धीरे होती है और ख़ुदा तआला केवल इनकी बातों से प्रसन्न नहीं हो सकता कि हम कह दें हम मुसलमान हैं या मोमिन हैं। अत: उसने फरमाया है-

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوْا أَنْ يَقُوْلُوْا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ

(अनकबूत - 3)

अर्थात क्या यह लोग गुमान कर बैठे हैं कि अल्लाह तआला इतना ही कह देने पर प्रसन्न हो जाए और ये लोग छोड़ दिए जाएं कि वे कहते हैं हम ईमान लाए और उनकी कोई आज़माइश न हो। यह बात ख़ुदा की सुन्नत के विरुद्ध है कि फूंक मारकर ख़ुदा का वली बना दिया जाए। यदि यही सुन्नत होती तो फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते और अपने प्राण न्योछावर करने वाले सहाबा को फूंक मारकर ही वली बना देते उनको परीक्षा में डलवा कर उनके सर न कटवाते और ख़ुदा तआला उनके बारे में यह न फरमाता-

فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا

(अलअहज़ाब - 24)

अत: जब दुनिया कठिनाइयों और परिश्रम के बिना हाथ नहीं

आती तो विचित्र मूर्ख है वह इंसान जो धर्म को बिना छुए वाला हलवा समझता है। यह तो सच है कि धर्म आसान है परंतु प्रत्येक नेमत मेहनत को चाहती है हालांकि इस्लाम ने तो ऐसी मेहनत भी नहीं रखी हिंदुओं में देखो कि उनके योगियों और सन्यासियों को क्या-क्या करना पड़ता है कहीं उनकी कमरे मारी जाती हैं, कोई नाखून बढ़ाता है। ऐसी ही ईसाइयों में रहबानियत (ब्रह्मचर्य) थी इस्लाम ने इन बातों को नहीं रखा अपितु उसने यह शिक्षा दी قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अश्शम्स - 10) अर्थात मुक्ति पा गया वह व्यक्ति जिसने नफ़्स को पवित्र किया अर्थात जिसने हर प्रकार की बिदअत, दुराचार, तामसिक भावनाओं से ख़ुदा तआला के लिए पृथक कर लिया और हर प्रकार के कामवासना संबंधी आनंदों को त्यागकर ख़ुदा के मार्ग में कष्टों को प्राथमिकता दी। ऐसा मनुष्य वास्तव में मुक्ति प्राप्त है जो ख़ुदा तआला को प्राथमिकता देता है तथा दुनिया और उसके आडंबरों को छोड़ता है★और फिर फरमाया- قَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا (अश्शम्स - 11) मिट्टी के बराबर हो गया वह मनुष्य जिसने नफ़्स को गंदा कर लिया अर्थात जो ज़मीन की ओर झुक गया। जैसे यह एक ही वाक्य पवित्र क़ुरआन की समस्त शिक्षा का सारांश है जिससे मालूम होता है कि इंसान किस प्रकार

★ **हाशिया:-** बद्र से जिसने धर्म को प्राथमिकता दी वह ख़ुदा के साथ मिल गया। नफ़्स को मिट्टी के साथ मिला देना चाहिए। ख़ुदा तआला को हर बात में प्राथमिकता देनी चाहिए यही धर्म का सारांश है जितने बुरे तरीके हैं उन सब को त्याग देना चाहिए तब ख़ुदा मिलता है।

(बद्र- जिल्द 2 नंबर 6, पृष्ठ 3, दिनांक 9 फरवरी 1906)

ख़ुदा तआला तक पहुंचता है। यह बिल्कुल सच्ची और पक्की बात है कि जब तक इंसान मानव शक्तियों के बुरे तरीके को नहीं छोड़ता उस समय तक ख़ुदा नहीं मिलता। दुनिया की गंदगियों से निकलना चाहते हो और ख़ुदा तआला से मिलना चाहते हो तो उन आनंदों को त्याग दो अन्यथा-

हम ख़ुदा ख्वाहि व हम दुनिया ए दूं
ईं ख्याल अस्त व मुहाल अस्त व जुनूं

इंसान की प्रकृति में वास्तव में बुराई न थी और न कोई चीज़ बुरी है परंतु बुरा इस्तेमाल करना बुरा बना देता है। उदाहरणतया दिखावे को लो। यह भी वास्तव में बुरा नहीं क्योंकि यदि कोई काम केवल ख़ुदा तआला के लिए करता है और इसलिए करता है कि उस नेकी की प्रेरणा दूसरों को भी मिले तो यह दिखावा भी नेकी है।

दिखावे के दो प्रकार हैं एक दुनिया के लिए उदाहरणतया कोई आदमी नमाज़ पढ़ रहा है और पीछे कोई बड़ा आदमी आ गया उसके ख्याल और ध्यान से नमाज़ को लंबा करना आरंभ कर दिया। ऐसे अवसर पर कुछ लोगों पर ऐसा रोब पड़ जाता है कि वह फूल फूल जाते हैं। यह भी दिखावे का एक प्रकार है जो हर समय प्रकट नहीं होता परंतु अपने समय पर जैसे भूख के समय रोटी खाता है या प्यास के समय पानी पीता है परंतु इसके विपरीत जो व्यक्ति केवल अल्लाह तआला के लिए नमाज़ को संवार संवार कर पढ़ता है वह दिखावे में दाखिल नहीं। अपितु ख़ुदा की प्रसन्नता को प्राप्त करने का माध्यम है। अत: दिखावे के भी स्थान होते हैं और इंसान ऐसा प्राणी है कि बेमौका दोषों पर दृष्टि नहीं डालता। उदाहरणतया एक

व्यक्ति अपने आप को बड़ा अफ़ीफ़ (पत्नीव्रत) और संयमी समझता है रास्ते में अकेला जा रहा है रास्ते में वह जवाहरात की एक थैली पड़ी हुई पाता है वह उसे देखता है और सोचता है कि हस्तक्षेप की कोई बात नहीं, कोई देखता नहीं यदि यह उस समय उस पर गिरता नहीं और समझता है कि दूसरे का हक होगा और रुपया जो गिरा हुआ है आखिर किसी का है इन बातों को सोच कर यदि उस पर नहीं गिरता और लालच नहीं करता तो वास्तव में पूर्ण इफ़्फ़त और संयम से काम लेता है अन्यथा यदि निरा दावा ही दावा है तो उस समय उसकी वास्तविकता खुल जाएगी और वह उसे ले लेगा।

इसी प्रकार एक व्यक्ति जिसके बारे में यह विचार है कि वह दिखावा नहीं करता, जब दिखावे का समय हो और वह न करे तो सिद्ध होगा कि नहीं करता परंतु जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया कभी इन आदतों का स्थान ऐसा होता है कि वह बदलकर नेक हो जाती हैं तो नमाज़ जो जमाअत के साथ पढ़ता है उसमें भी एक दिखावा तो है किंतु इंसान का उद्देश्य यदि दिखावा ही हो तो वह निस्संदेह दिखावा है और यदि उस से मतलब अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करना अभीष्ट है तो यह एक विचित्र नेमत है। अत: मस्जिद में भी नमाज़ पढ़ो और घरों में भी ऐसा ही एक स्थान पर धर्म के कार्य के लिए चंदा हो रहा हो एक व्यक्ति देखता है कि लोग जागरुक नहीं होते और खामोश हैं वह केवल इस विचार से लोगों को प्रेरणा मिले सर्वप्रथम चंदा देता है बज़ाहिर यह दिखावा होगा परंतु पुण्य का कारण होगा। इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन में फरमाया है-

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا (लुक़मान - 19)

(अर्थात) पृथ्वी पर अकड़ अकड़ कर मत चलो परंतु हदीस से सिद्ध है कि एक युद्ध में एक व्यक्ति अकड़कर और छाती निकाल कर चलता था आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे देखकर फरमाया कि यह कृत्य ख़ुदा तआला को अप्रिय है परंतु इस समय अल्लाह तआला इसको पसंद करता है।

गर हिफ़्ज़ मरातिब न कुनी ज़न्दीकी

अतः आचरण यथास्थान मोमिन और अनुचित स्थान पर काफिर बना देता है। मैं पहले कह चुका हूं कि कोई आचरण बुरा नहीं अपितु बुरे इस्तेमाल से बुरे हो जाते हैं।

हज़रत उमर रजि अल्लाह तआला अन्हु के क्रोध के संबंध में आया है कि आप से किसी ने पूछा कि इस्लाम से पूर्व आप बहुत क्रोध वाले थे। हज़रत उमर ने उत्तर दिया कि क्रोध तो वही है यद्यपि पहले बेठिकाने चलता था परंतु अब ठिकाने से चलता है। इस्लाम प्रत्येक शक्ति को अपने स्थान पर इस्तेमाल करने का निर्देश देता है इसलिए कभी यह कोशिश न करो कि तुम्हारी शक्तियां जाती रहें अपितु उन शक्तियों का सही इस्तेमाल सीखो। यह सब झूठी और ख्याली आस्थाएं हैं जो कहते हैं कि हमारी शिक्षा यह है कि एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा (गाल) फेर दो। संभव है यह शिक्षा उस समय स्थान और समय से विशिष्ट कानून की तरह हो, हमेशा के लिए यह कानून न कभी हो सकता है और न यह चल सकता है इसलिए कि मनुष्य एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसकी शाखाएं चारों ओर फैली हुई हैं यदि उसकी एक ही शाखा की परवाह की जाए तो शेष शाखाएं

तबाह और बर्बाद हो जाएंगी। ईसाई धर्म की इस शिक्षा में जो दोष है वह भली भांति प्रकट है इससे मनुष्य की समस्त शक्तियों का पोषण और विकास क्योंकर हो सकता है। यदि केवल क्षमा करना ही एक उत्तम चीज़ होती तो फिर प्रतिशोधात्मक शक्ति उसकी शक्तियों में क्यों रखी गई है और क्यों फिर इस क्षमा करने की शिक्षा पर अमल नहीं किया जाता? किंतु इसके विपरीत पूर्ण शिक्षा वह है जो इस्लाम ने प्रस्तुत की है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हमें मिली और वह यह है-

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

(अश्शूरा - 41)

अर्थात बुराई का बदला उतनी ही बुराई है जो की गई हो परंतु जो व्यक्ति गुनाह को क्षमा कर दे और ऐसे अवसर पर क्षमा कर दे..... कि उससे कोई सुधार होता हो कोई बुराई पैदा न होती हो तो उसका प्रतिफल अल्लाह तआला पर है।

इससे स्पष्ट तौर पर प्रकट होता है कि पवित्र क़ुरआन का कदापि यह आशय नहीं कि अकारण ज़रूर प्रत्येक स्थान पर बुराई का मुकाबला न किया जाए और प्रतिशोध न लिया जाए। बल्कि ख़ुदा का आशय यह है कि स्थान एवं अवसर को देखना चाहिए कि क्या वह अवसर गुनाह के क्षमा कर देने का है या दंड देने का? यदि उस समय दंड देना ही हितकारी हो तो उतना दंड दिया जाए जो योग्य है और यदि क्षमा का स्थान है तो दंड का विचार त्याग दो।

यह विशेषता है इस शिक्षा की क्योंकि वह हर पहलू का ध्यान रखती है। यदि इंजील पर अमल करके प्रत्येक उपद्रवी और बदमाश

को छोड़ दिया जाए तो दुनिया में अंधेर मच जाए। इसलिए तुम हमेशा यही ध्यान रखो कि समस्त शक्तियों को मुर्दा मत समझो। तुम्हारी कोशिश यह हो यथास्थान इस्तेमाल करो। मैं निस्संदेह कहता हूं कि यह शिक्षा ऐसी है जिसने मानवीय शक्तियों के नक्शे को खींच कर दिखा दिया है परंतु खेद है उन लोगों पर जो ईसाइयों की मीठी-मीठी बातें सुनकर मुग्ध हो जाते हैं और इस्लाम जैसी नेमत को हाथ से छोड़ बैठते हैं। सच्चा हर हालत में दूसरों के लिए मधुर प्रकट नहीं होता जिस प्रकार कि मां हर समय बच्चे को खाने के लिए मिष्ठान नहीं दे सकती अपितु आवश्यकता पड़ने पर कड़वी दवाई भी देती है। ऐसा ही एक सच्चे सुधारक का हाल है। यही शिक्षा प्रत्येक पहलू से मुबारक शिक्षा है। ख़ुदा ऐसा है जो सच्चा ख़ुदा है हमारे ख़ुदा पर ईसाई भी ईमान लाते हैं जो विशेषताएं हम ख़ुदा तआला की मानते हैं वह सब को स्वीकार करनी पड़ती हैं। पादरी फंडर अपनी पुस्तक में एक स्थान पर लिखता है कि यदि कोई ऐसा द्वीप हो जहां ईसाइयत का उपदेश नहीं पहुंचा तो क़यामत के दिन उन लोगों से क्या प्रश्न होगा? तब स्वयं ही उत्तर देता है कि उनसे यह प्रश्न न होगा कि तुम यशु पर और उसके कफ़्फ़ारे पर ईमान लाए थे या न लाए थे अपितु उनसे यही प्रश्न होगा कि तुम उस ख़ुदा को मानते हो जो इस्लाम की विशेषताओं का ख़ुदा, एक भागीदार रहित है।

इस्लाम का ख़ुदा वह ख़ुदा है जो प्रत्येक जंगल में रहने वाला स्वयं स्वभाविक तौर पर विवश है कि उस पर ईमान लाए। प्रत्येक मनुष्य की अंतरआत्मा और हृदय का प्रकाश साक्ष्य देता है कि वह इस्लामी ख़ुदा पर ईमान लाए। इस्लाम की इस वास्तविकता और

असल शिक्षा को जिस का विवरण अभी किया गया, आजकल के मुसलमान भूल गए हैं और इसी बात को पुन: स्थापित कर देना हमारा काम है और यही एक महान उद्देश्य है जिसको लेकर हम आए हैं।

इन बातों के अतिरिक्त जो ऊपर वर्णन की गईं और भी ज्ञान संबंधी तथा आस्थागत ग़लतियां मुसलमानों के बीच फैल रही हैं जिनका दूर करना हमारा काम है। उदाहरणतया इन लोगों की आस्था है कि ईसा और उसकी मां शैतान के स्पर्श से पवित्र हैं और शेष समस्त नाऊज़ुबिल्ला पवित्र नहीं है। यह एक स्पष्ट गलती है अपितु कुफ्र है और इसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घोर अपमान है। उन लोगों में लेशमात्र भी स्वाभिमान नहीं जो इस प्रकार की समस्याएं गढ़ लेते हैं और इस्लाम को अपमानित करने का प्रयास करते हैं। यह लोग इस्लाम से बहुत दूर हैं वास्तव में यह समस्या इस प्रकार से है कि पवित्र क़ुरआन से सिद्ध होता है कि पैदाइश दो प्रकार की होती है एक रूहल क़ुदुस (अर्थात फरिश्ते) के स्पर्श से और एक शैतान के स्पर्श से। समस्त नेक और सत्यनिष्ठ लोगों की संतान रूहल क़ुदुस अर्थात फरिश्ते के स्पर्श से होती है और जो संतान बुराई का परिणाम होती है वह शैतान के स्पर्श से होती है। समस्त नबी रूहल क़ुदुस के स्पर्श से पैदा हुए थे परंतु चूंकि हज़रत ईसा के बारे में यहूदियों ने यह ऐतराज़ किया था कि वह नऊज़ुबिल्ला नाजाइज़ (वलदुज़्ज़िना) है तथा मरियम का एक और सिपाही पंडारा नामक के साथ अवैध संबंध का माध्यम है और शैतान के स्पर्श का परिणाम है। इसलिए अल्लाह तआला ने उनके ऊपर से यह आरोप दूर करने के लिए उनके संबंध में यह गवाही दी थी कि उनकी पैदाइश भी रूहल

क़ुदुस के स्पर्श से हुई थी क्योंकि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अन्य नबियों के बारे में कोई इस प्रकार का ऐतराज़ न था इसलिए उनके बारे में ऐसी बात वर्णन करने की आवश्यकता भी न पड़ी।

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माता पिता अब्दुल्ला और आमिना को तो पहले ही से हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और उनके बारे में ऐसा विचार वहम व गुमान में भी कभी किसी को न हुआ था। एक व्यक्ति जो मुकद्दमे में गिरफ्तार हो जाता है तो उसके लिए सफाई की गवाही की आवश्यकता पड़ती है परंतु जो व्यक्ति मुकद्दमे में गिरफ्तार ही नहीं हुआ उसके लिए सफाई की गवाही की कुछ आवश्यकता ही नहीं।

ऐसा ही एक और ग़लती जो मुसलमानों के मध्य पड़ गई हुई है वह मेराज के बारे में है। हमारा ईमान है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज हुआ था परंतु इसमें जो कुछ लोगों की आस्था है कि वह केवल एक साधारण स्वप्न था यह आस्था गलत है तथा जिन लोगों की आस्था है कि मेराज में आंहज़रत इसी पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए थे तो यह आस्था भी गलत है अपितु असल बात और सही आस्था यह है कि मेराज कश्फ़ी रंग में एक नूरानी अस्तित्व के साथ हुआ था। वह एक अस्तित्व था परंतु नूरानी और एक जागने की अवस्था थी परंतु कशफ़ी और नूरानी जिसको इस दुनिया के लोग नहीं समझ सकते परंतु वही (समझ सकते हैं) जिन पर वह हालत आई हुई हो। अन्यथा भौतिक शरीर और भौतिक जागने की अवस्था के साथ आकाश पर जाने के लिए

तो स्वयं यहूदियों ने चमत्कार मांगा था जिसके उत्तर में पवित्र क़ुरआन में कहा गया था-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इसराइल - 94)

कह दे मेरा रब पवित्र है मैं तो एक इंसान रसूल हूं। इंसान इस प्रकार उड़कर कभी आकाश पर नहीं जाते। यही ख़ुदा की सुन्नत सदैव से जारी है।

एक और ग़लती अधिकतर मुसलमानों के मध्य है कि वे हदीस को पवित्र क़ुरआन पर प्राथमिकता देते हैं हालांकि यह ग़लत बात है पवित्र क़ुरआन एक निश्चित श्रेणी रखता है और हदीस की श्रेणी वैचारिक है। हदीस काज़ी (जज) नहीं अपितु क़ुरआन उस पर काज़ी है। हां हदीस पवित्र क़ुरआन की व्याख्या है उसको अपनी श्रेणी पर रखना चाहिए। हदीस को इस सीमा तक मानना आवश्यक है कि पवित्र क़ुरआन की विरोधी न पड़े और उसके अनुकूल हो। किंतु यदि उसकी विरोधी पड़े तो वह हदीस नहीं अपितु बहिष्कृत कथन है। परंतु पवित्र क़ुरआन के समझने के लिए हदीस आवश्यक है। पवित्र क़ुरआन में जो ख़ुदा के आदेश उतरे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको व्यवहारिक रूप में करके और करवा के दिखा दिया और एक आदर्श स्थापित कर दिया। यदि यह आदर्श न होता तो इस्लाम समझ में न आ सकता परंतु मूल क़ुरआन है। कुछ अहले कशफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीधे तौर पर ऐसी हदीस सुनते हैं जो दूसरों को मालूम नहीं हुई या मौजूदा हदीसों की पुष्टि कर देते हैं।

अतः इस प्रकार की बहुत सी बातें हैं जो कि उन लोगों में

पाई जाती हैं, जिनसे ख़ुदा तआला नाराज़ है और जो इस्लामी रंग से बिल्कुल विपरीत हैं। इसलिए अल्लाह तआला अब उन लोगों को मुसलमान नहीं जानता जब तक वे गलत आस्थाओं को त्याग कर सीधे मार्ग पर न आ जाएं और इस मतलब के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर (अवतरित) किया है कि मैं उन समस्त ग़लतियों को दूर कर के असली इस्लाम फिर दुनिया में स्थापित करूं।

यह अंतर है हमारे मध्य और उन लोगों के मध्य। इनकी हालत वह नहीं हो रही जो इस्लामी हालत थी यह एक ख़राब और निकम्मे बाग़ के समान हो गए हैं। इनके दिल अपवित्र हैं और ख़ुदा तआला चाहता है कि एक नई क़ौम पैदा करे जो सच्चाई और ईमानदारी को अपनाकर सच्चे इस्लाम का आदर्श हो। इति।

(अल्हकम- 17 फरवरी, 17 मई, 17 जून 1906 ई०)